

महालक्ष्मी चालोसा

दोहा

जय जय श्री महालक्ष्मी, करूँ मात तव ध्यान।
सिद्ध काज मम कीजिए, निज शिशु सेवक जान॥

चौपाई 1

नमो महा लक्ष्मी जय माता।
तेरो नाम जगत विख्याता॥

चौपाई 2

आदि शक्ति हो मात भवानी।
पूजत सब नर मुनि ज्ञानी॥

चौपाई 3

जगत पालिनी सब सुख करनी।
निज जनहित भण्डारन भरनी॥

चौपाई 4

श्वेत कमल दल पर तव आसन।
मात सुशोभित है पद्मासन॥

चौपाई 5

श्वेताम्बर अरु श्वेता भूषण।
श्वेतहि श्वेत सुसज्जित पुष्पन॥

चौपाई 6

शीश छत्र अति रूप विशाला।
गल सोहे मुक्तन की माला॥

चौपाई 7

सुन्दर सोहे कुंचित केशा।
विमल नयन अरु अनुपम भेषा॥

चौपाई 8

कमलनाल सम भुज तव चारी।
सुर नर मुनिजन हित सुखकारी॥

चौपाई 9

अद्भुत छटा मात तव बानी।
सकल विश्व कीन्हो सुखखानी॥

चौपाई 10

शांति स्वभाव मृदुल तव भवानी।
सकल विश्व की हो सुखखानी॥

चौपाई 11

महालक्ष्मी धन्य हो माई।
पंच तत्व में सृष्टि रचाई॥

चौपाई 12

जीव चराचर तुम उपजाए।
पशु पक्षी नर नारि बनाए॥

चौपाई 13

क्षितितल अगणित वृक्ष जमाए।
अमित रंग फल फूल सुहाए॥

चौपाई 14

छवि बिलोक सुर मुनि नर नारी।
करे सदा तव जय-जय कारी॥

चौपाई 15

सुरपति औ नरपत सब ध्यावैं।
तेरे सम्मुख शीश नवावैं॥

चौपाई 16

चारहु वेदन तव यश गाया।
महिमा अगम पार नहिं पाया॥

चौपाई 17

जापर करहु मातु तुम दाया।
सोई जग में धन्य कहाया॥

चौपाई 18

पल में राजाहि रंक बनाओ।
रंक राव कर बिलम न लाओ॥

चौपाई 19

जिन घर करहु मात तुम बासा।
उनका यश हो विश्व प्रकाशा॥

चौपाई 20

जो ध्यावै सो बहु सुख पावै।
विमुख रहै हो दुख उठावै॥

चौपाई 21

महालक्ष्मी जन सुख दाई।
ध्याऊं तुमको शीश नवाई॥

चौपाई 22

निज जन जानि मोहिं अपनाओ।
सुख सम्पति दे दुख नसाओ॥

चौपाई 23

ॐ श्री-श्री जय सुख की खानी।
रिद्धि सिद्ध देउ मात जन जानी॥

चौपाई 24

ॐ ह्रीं-ॐ ह्रीं सब व्याधि हटाओ।
जन उन बिमल दृष्टि दर्शाओ॥

चौपाई 25

ॐ क्लीं-ॐ क्लीं शत्रुन क्षय कीजै।
जनहित मात अभय वर दीजै॥

चौपाई 26

ॐ जय जयति जय जननी।
सकल काज भक्तन के सरनी॥

चौपाई 27

ॐ नमो-नमो भवनिधि तारनी।
तरणि भंवर से पार उतारनी॥

चौपाई 28

सुनहु मात यह विनय हमारी।
पुरवहु आश न करहु अबारी॥

चौपाई 29

ऋणी दुखी जो तुमको ध्यावै।
सो प्राणी सुख सम्पत्ति पावै॥

चौपाई 30

रोग ग्रसित जो ध्यावै कोई।
ताकी निर्मल काया होई॥

चौपाई 31

विष्णु प्रिया जय-जय महारानी।
महिमा अमित न जाय बखानी॥

चौपाई 32

पुत्रहीन जो ध्यान लगावै।
पाये सुत अतिहि हुलसावै॥

चौपाई 33

त्राहि त्राहि शरणागत तेरी।
करहु मात अब नेक न देरी॥

चौपाई 34

आवहु मात विलम्ब न कीजै।
हृदय निवास भक्त बर दीजै॥

चौपाई 35

जानूँ जप तप का नहिं भेवा।
पार करौ भवनिध बन खेवा॥

चौपाई 36

बिनवों बार-बार कर जोरी।
पूरण आशा करहु अब मेरी॥

चौपाई 37

जानि दास मम संकट टारौ।
सकल व्याधि से मोहिं उबारौ॥

चौपाई 38

जो तव सुरति रहै लव लाई।
सो जग पावै सुयश बड़ाई॥

चौपाई 39

छायो यश तेरा संसारा।
पावत शेष शम्भु नहिं पारा॥

चौपाई 40

गोविंद निशदिन शरण तिहारी।
करहु पूरण अभिलाष हमारी॥

समापन दोहा

महालक्ष्मी चालीसा, पढ़ै सुनै चित लाय।
ताहि पदारथ मिलै अब, कहै वेद अस गाय॥